पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

संक्षिप्त परिचय

- **जन्म** - 27 मई, 1894 ई०।
- **जन्म स्थान** - खैरागढ़ (जबलपुर)।
- **पिता**-पुन्नालाल बख्शी
- **मृत्यु** - 27 दिसम्बर, 1971 ई०।
- **भाषा**-खड़ीबोली।
- **सम्पादन**- 'सरस्वती' एवं 'छाया'

जीवन परिचय –

बख्शी जी का जन्म 27 मई, 1894 ई0 में जबलपुर के खैरागढ़ नामक स्थान में हुआ था। इनके पिता का नाम पुन्नालाल बख्शी तथा बाबा का नाम उमराव बख्शी साहित्य प्रेमी और कवि थे। इनकी माता को भी साहित्य से प्रेम था। परिवार के साहित्यिक वातावरण के प्रभाव के कारण ये विद्यार्थी जीवन से ही कविताएं रचते थे। बी० ए० पास करते ही इन्होंने 'सरस्वती' में अपनी रचनाएँ प्रकाशित कराना प्रारम्भ किया। बाद में 'सरस्वती' के अतिरिक्त अन्य पत्र-

पत्रिकाओं में भी इनकी रचनाएँ प्रकाशित होने लगीं। साहित्य का यह महान् साधक 27 दिसम्बर, 1971 ई0 में परलोकवासी हो गया।

बख्शीजी ने 1920 ई0 से 1927 ई0 तक बड़ी कुशलता से 'सरस्वती' का सम्पादन किया। कुछ वर्षों तक इन्होंने 'छाया' मासिक पत्रिका का भी सम्पादन बड़ी योग्यता से किया। इन्हें हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा 1949 में साहित्य वाचस्पति की उपाधि से अलंकृत किया गया।।

कृतियाँ-

बख्शीजी की कृतियों का विवरण इस प्रकार है-

- निबन्ध संग्रह - 'प्रबन्ध पारिजात', 'पंचपात्र', 'पद्मवन', 'मकरन्द बिन्दु', 'कुछ बिखरे पत्रे', 'मेरा देश' आदि।
- कहानी-संग्रह- 'झलमला', 'अञ्जलि'।
- आलोचना - 'विश्व साहित्य', 'हिन्दी साहित्य विमर्श', 'साहित्य शिक्षा', 'हिन्दी उपन्यास साहित्य', 'हिन्दी कहानी साहित्य', विश्व साहित्य, समस्या, समस्या और समाधान, पंचपात्र, पंचरात्र, नवरात्र, यदि मैं लिखता।
- काव्य-संग्रह- 'शतदल', 'अश्रुदल', 'पंचपात्र'।
- उपन्यास-कथाचक्र, भोला (बाल उपन्यास), वे दिन (बाल उपन्यास)।
- आत्मकथा संस्मरण - मेरी अपनी कथा, जिन्हें नहीं भूलूँगा, अंतिम अध्याय।

भाषा-शैली-

भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली है। समीक्षात्मक, भावात्मक, विवेचनात्मक, व्यंग्यात्मक शैली को इन्होंने अपनाया है।